[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3592

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला में रंग – प्रागैतिहासिक काल मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में

प्रो. सुनीता जैन
शास० महारानी लक्ष्मीबाई, स्नातकोत्तर कन्या महा०, किला भवन, इन्दौर

चित्रकला को अभिव्यक्तिगत सार्मथ्य प्रदान करने वाले तत्वों में रंग प्रमुख है। चित्रकला में रंग की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। चित्रकार जिस आधारभूत सतह पर चित्रांकन करता है उसमें रंग उसकी पर्याप्त सहायता करते हैं इन्हीं के आधार पर कलाकृति मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करती है। रंग का आधार पाकर बनाई गई रचना अपने अभिष्ट को पाने में समर्थ होती है। रंग के माध्यम से चित्रकार अपनी कृति को कोमल बनाता है। चित्रकार का बिम्ब–विधान चित्र सुलभ संवेदनशीलता बहुत कुछ रंग पर निर्भर करती है। रंग का प्रयोग जितना संगीत पूर्ण, उचित और सन्तुलित होगा मानव के मानस पटल पर उसका प्रभाव उतना ही गहरा होगा।

चित्रकला में रंग प्रागैतिहासिक काल में – सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव में कलात्मक बोध रहा है। मनुष्य में चित्रण की प्रवृति उस समय से है जब वह आदि मानव था उसके तात्कालीन सांस्कृतिक विकास का प्रारम्भ चित्रकला से ही हुआ। भारत में आदिम चित्रों की पूर्ण तौर पर खोज नहीं हुई पर इतना तो मानना पड़ेगा कि भारत में प्राप्त आदिम चित्रकला और उसमें प्रयुक्त रंग का उद्‌गम प्रागैतिहासिक चित्रकारियों से मिलता है। इस समय तक मानव ने रेखांकन के साथ–साथ खनिज रंग को भी शैल की भित्तियों पर प्रयुक्त करने की महारत हासिल कर ली थी।

प्रागैतिहासिक काल के चित्रों के समस्त उदाहरण लाल, काले, पीले और सफेद रंगों से बने हैं। यह चित्र चट्टानों की दीवारों, गुफाओं के फर्शों, दीवारों और खुली प्रस्तर शिलाओं पर बने हैं। इन चट्टानों की दीवारों पर लाल, काले या अन्य रंगों को पशुओं की चर्बी में मिलाकर चित्र बनाये गये हैं, रंगों को धरातल पर सपाट लगाया गया है। इन चित्रों में रंग का प्रयोग बाल सुलभ प्रकृति के आधार पर किया गया है। यद्यपि ये चित्र भद्दे और असंयत है परन्तु इनमें सजीवता और तूलिका की गति है। रंगों को चर्बी से मिलाने के लिये जानवरों की पुट्ठे की हड्डी का प्याली के रूप में प्रयोग करते थे। अधिकाश चित्र उदाहरण रेखा और सपाट रंगों के प्रयोग से बनाये गये हैं। इन चित्रों की सरलता, सुगमता आज के चित्रकार के लिये एक महान् प्रेरणा है।

मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक चित्र व उनमें प्रयुक्त रंग – भारत में प्रागैतिहासिक चित्र मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा दक्षिण भारत में प्रागैतिहासिक के कुछ प्रमुख क्षेत्रों में उपलब्ध हुए हैं। भारत के उक्त विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध चित्रों में मनुष्य पशु–पक्षियों तथा अन्य जीव जन्तुओं को ढ़ेड़ी–मेढ़ी रेखाओं, पीले व लाल रंगों में कल्पना द्वारा अंकित किया गया है। प्रागैतिहासिक कला की सजीव परम्परा के कलावशेष मुख्यतया मध्यप्रदेश से उपलब्ध हुए है। इन प्राप्त चित्रों के उदाहरणों से आदिकालीन चित्रांकन वृति के विकास क्रम का ही ज्ञान नहीं होता बल्कि आदि मानव सभ्यता एवं उसकी जीवन क्रियाओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

रायगढ़ – यह मध्यप्रदेश का प्रमुख जनपद है जहाँ पर प्रागैतिहासिक चित्र प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं इसके कबरा पहाड़ी क्षेत्रों में अनेक पशुओं के चित्र मिले हैं जो गेरूए रंग में बनाए गए हैं इनमें राभरज तथा गेरू का प्रयोग हुआ है इनमें मानवाकृतियों का संयोजन भी दर्शनीय है।

पंचमढ़ी – यह मध्यप्रदेश में शिलाचित्रों का प्रमुख केन्द्र है।गार्डेन महोदय ने सर्वप्रथम इसको खोजकर 15 से अधिक शिलाचित्रों की उपलब्धि की है। मानवाकृति इमली खोह में सफेद रंग से अंकित प्राप्त हुई है। मान्टेरोजा में गुलाबी रंग से अंकित एक स्त्री का चित्र है। इमली खोह में बन्दरों के समूह और शहद एकचित्र करते हुये मनुष्य जिन्हें मधुमक्खियों ने परेशान कर रखा है सफेद रंग से चित्रित हैं।

होशंगाबाद – होशंगाबाद से लगभग 3 मील दूर इटारसी जाने वाले मार्ग के समीप आदमगढ़ पहाड़ी में बारह से अधिक चित्र मिले हैं जिसमें आदिम प्रवृति के चित्र अंकित है। गेरूए लाल रंग से अंकित घोड़े के शिकार का दृश्य दिखाया गया है। हाथी के सामने कत्थई रंग में अंकित एक दीर्घ श्रृंग महिष का चित्र। आदमगढ़ पहाड़ी में एक अति प्राचीन आदिम मानव युग्म जो युद्ध करता हुआ प्रतीत होता है कत्थई रंग से चित्रित है।

ग्वालियर – प्रो. जगदीश गुप्त के अनुसार शिकार दृश्य तथा अन्य आकृतियों के चित्र गेरूये लाल रंग में अंकित है।

मन्दसौर – मन्दसौर जिले में मोरी नामक स्थान के दरीचित्र शी प्रसिद्ध हुए है। इस क्षेत्र के चित्रों में सूर्य, चक्र, स्वस्तिक, पीपल की पंत्तियाँ, अष्टदल कमल, नृत्यरत आदमी तथा ग्रामीण गाड़ियों को दर्शाया गया है। ये चित्र गेरूए तथा हल्के काले रंगों से बनाये गये है।

इसके अतिरिक्त भीमबेटका, पन्ना, छतरपुर, कटनी, सागर तथा भोपाल आदि स्थानों पर भी विभिन्न शिलाश्रयों तथा पहाड़ी खोहों में प्रागैतिहासिक चित्रों के उदाहरण मिले हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भोपाल से कोई 60 किलोमीटर दूर स्थित भीमबेटका पहाड़ी है। ऊँची चट्टान पर खड़ी इस पहाड़ी पर कोई 500 गुहाचित्रों का एक विशिष्ट चित्र संसार निर्मित है इन गुहाचित्रों में पीले, लाल और सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है यहाँ के चित्र विश्व की किसी शैल श्रृंखला से कम नही है। बरखेड़ा, बैरागढ़, साँची, धरमपुरी और भदभदा आदि कुछ अन्य क्षेत्र है जहाँ प्रागैतिहासिक चित्रों व उनके रंग संयोजन के अनूठे उदाहरण देखे जा सकते है।

मध्यप्रदेश के प्रागैतिहासिक चित्रों की विशेषताएँ – मध्यप्रदेश के सभी क्षेत्रों में पाए जाने वाले गृहा एवं शैलाश्रयों बने प्रागैतिहासिक चित्र आदिम मानव के रहन–सहन सामाजिक जीवन तथा उसकी दिनचर्या को प्रदर्शित करते है। इस युग के चित्र गेरू, काजल, पेवड़ी, लालरंग, मिश्रित काले और सफेद माटी के रंगों द्वारा बनाये गये है। प्रकृति के आघातो को कैसे सहन कर सकें। यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है इस संबंध में कहा जाता है कि कालक्रम से उन पर चूने की परत चढ़ गई थी जिसने उन्हें निरन्तर हो रहें प्राकृतिक आघातों से बचाया।

रंग चेतना – आदिमानव ने प्रागैतिहासिक काल में जिन चित्र का निर्माण किया उनसे उसकी रंग चेतना की गति का भी पता चलता है उनका संयोजन देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी आधुनिक चित्रकार ने वर्षो पूर्व, शैलश्रयों में बैठकर कला साधना की हो। इन चित्रों के विषय तात्कालिक है और उनका आकार बोध भी पर्याप्त प्रभावपूर्ण है। रंगों का सहज प्रयोग उन्हें विशेष दर्शनीय बनाता है।

छाया प्रकाश – प्रागैतिहासिक चित्रों में अनेक स्थानों पर छाया प्रकाश का बेतरतीब ही सही लेकिन प्रयोग अवश्य हुआ है धूप–छाँव के प्रभाव को चित्रों में गहरे तथा काले रंगों से दर्शाया गया है। इन चित्रों की रंग योजना तकनीकी नियमबद्ध न होकर भी सहज ग्राहय है। खड़िया, रामरज, गेरू, काजल आदि स्थानीय रंगों से इन चित्रों को सजाया गया है।

पारम्परिक आधार और रंगों के गुण – रंग के सन्तुलित और प्रभावपूर्ण प्रयोग के कारण ही भारत वर्ष की पारम्परिक चित्रकला ने विश्वभर में ख्याति अर्जित की है सभी पारम्परिक चित्र शैलियों में रंग के सन्तुलित आधार पर ही अंकन हुआ है इससे इन चित्रों में उपस्थित आकृतियों को जो स्वाभाविक अभिव्यक्ति मिली है वह उनके सहज गुणों को प्रभावशाली ढंग से समर्थ बनाती है चित्रित पात्रों की तेजस्विता, ओज और माधुर्य सभी को रंग का उत्तम प्रयोग समृद्ध बनाता है।

चित्रकला के नियमानुसार रंगों का प्रतीकात्मक प्रयोग आवश्यक भी है क्योंकि प्रत्येक रंग का अपना विशेष गुण होता है अतः चित्रकृति में अपने गुणों के अनुरूप प्रयुक्त रंग कृति को सबल बनाते है तथा चित्रकार की कल्पना को अभिव्यक्ति देते है।

वातावरण का निर्माण – चित्रकार के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि अपने विषय को अधिक रोचक बनाने हेतु कृति में उचित वातावरण का निर्माण करें। उसके रंग विशेष का क्या प्रभाव पड़ेगा इस बात को ध्यान में रखते हुये चित्रकार अपने विषय के अनुरूप वातावरण बनाता है चित्रकार के लिये ऐसा करना रंग के माध्यम से ही सम्भव होता है रंगों के कुप्रभाव से उसे बचना पड़ता है। कभी–कभी उसे ऐसे रंगों का प्रयोग एक साथ करना पड़ता है जो जातीय दृष्टि से समान नहीं होते। चित्रकार रंग का प्रयोग अपनी इच्छा से नहीं करता बल्कि रंग स्वयं चित्र में अपना योग देने के लिए प्रस्तुत होने लगते है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि – मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी हमारे जीवन में रंगों का एक विशिष्ट स्थान है रंग हमारी स्वस्थ सांस्कृतिक परम्परा के द्योतक है रंग विधान चित्रदर्शक की मानसिक स्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है अतः दर्शक की रूचि को ध्यान में रखते हुये ही चित्रकार को रंगों का प्रयोग अपनी कृति में करना पड़ता है।

चित्रकार का दृष्टिकोण –रंगों के प्रयोग संबंधी उपर्युक्त सिद्धांत यद्यपि चित्रकला की पारम्परिक मान्यताओं के द्योतक है रंग का प्रयोग और उनका संयोजन तथा विधान एक सीमा तक चित्रकार की अपनी दृष्टि, रूचि और अनुभव पर निर्भर करता है।वह पारम्परिक मान्यताओं को नकार भी सकता है। किन्तु साथ ही उसे इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि अपनी कृति में वह जिस नये रंग विधान को दर्शकों के समक्ष रख रहा है वह स्वयं उसे या देखने वालों को सन्तुष्टि दे सकेगा अथवा नहीं।

मानवीय भाव – प्रागैतिहासिक चित्रों में रंगों का प्रयोग करके भय, साहस, संवेग आदि मानवीय भावों की अभिव्यक्ति अवश्य हुई है किन्तु प्रकृति अथवा प्राकृतिक उपादानों का अंकन नही के बराबर हुआ है इसे आश्चर्य ही कहा जाना चाहिये कि प्रकृति की निरन्तर खोज में लगा आदि चितेरा आकाश, बादल, पेड़–पौधों, नदी पर्वत श्रृंखलाओं आदि को कैसे भुला बैठा।

ऐसे अनेक प्रश्न है जो प्रागैतिहासिक चित्रकला और रंग संयोजन के संबंध में उठाये जा सकते है किन्तु उन चित्रों और उनका रंग संयोजन देखने के बाद कुल मिलाकर हमें आदिमानव की सहज कला प्रवृति का परिचय मिलता है। जो हमारे लिए रहस्यमय भी और रोमांचकारी भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1 *प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास* – *बी.एन. लुनिया*
2 *भारत की सांस्कृतिक विरासत* – *डॉ. उमराव सिंह चौधरी*
3 *भारत की सांस्कृतिक विरासत* – *पुखराज जैन*
4 *भारतीय चित्रकला का इतिहास* – *अविनाश बहादुर वर्मा*
5 *भारतीय चित्रकला का इतिहास* – *प्रेमचन्द्र गोस्वामी*
6 *भारतीय चित्रांकन* – *रामकुमार विश्वकर्मा*